अपने–अपने स्थान पर

पहाड़–
जहां ऊँचाई का प्रतीक हैं
खाई गहराई का
एक अत्यन्त ऊँचा है
दूसरा अत्यन्त नीचा,
न पहाड़ बनता है अचानक
और न ही खाई
पहाड़ को गर्व है अपने
ऊँचे होने पर
तो खाई को अपनी गहराई पर
एक लम्बी परम्परा–इतिहास है
दोनों के निर्माण के लिए
लेकिन–
दोनो ही विकल्प हैं
एक–दूसरे का
दोनों ही स्थिर सन्तुष्ट हैं
अपने–अपने स्थान पर
अपनी ही स्थिति में
अडिग अंगद पांव सा
भूत से वर्तमान और भविष्य तक।